धर्म से अनुप्राणित हो व्यवहार - आचार्य महाप्रज्ञ

मोमासर 6 अप्रेल : अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ ने संबोधि ग्रंथ पर प्रवचन करते हुए कहा कि व्यक्ति का व्यवहार धर्म से अनुप्राणित होना चाहिए । आज धर्म स्थान पर सुनी हुई बातों को केवल सुनने की सीमा तक ही मान लिया गया है । उसको व्यवहार में उपयोग नहीं किया जाता, जिससे प्रामाणिकता, नैतिकता जीवन से अछुती रह जाती है । इसं युग में मानव ने नैतिकता से जीवन यापन न कर पाने का मानस बना लिया है । इसी कारण लोगों में एक दूसरे के प्रति अविश्वास पैदा हो गया है । अचार्य प्रवर ने एकता के लिए विश्वास को जरूरी बताते हुए कहा कि विश्वास की एक ऐसा तत्व है जो दो को एक बना देता है । उन्होने कहा कि अनेकांत का सिद्धान्त दो विरोधि का सहअस्तिव कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है ।

राष्ट्रसंत ने भगवान महावीर द्वारा प्रदत सब जीव समान है सूत्र की विशद विवेचना करते हुए कहा कि व्यवहार जगत में सब भिन्न दिख रहे हैं । ऐसी स्थिति में सिद्धान्त के हद्य को समझना कठिन है । जिस तरह से समुद्र के गर्भ में छिपे रत्नों को पाने के लिए गोता लगाना होता, भीतर जाना होता है वैसे ही सिद्धान्त के रहस्य को जानने के लिए इसकी गहराई में जाने की जरूरत है । तात्विक दृष्टि से विचार करें तो सब समान है और व्यवहार दृष्टि से सब भिन्न है । सब आत्माओं में अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन,अनन्त आनन्द, अनन्द शक्ति होती है । इस दृष्टि से सब समान है । भिन्नता केवल अभिव्यक्ति की है । कितना प्रकटीकरण हुआ है यह व्यक्ति पर निर्भर करता है ।

युवाचार्य महाप्रज्ञ ने गीता में प्रतिपादित सात्विक धृति को व्याख्यायित करते हुए कहा कि धारणा करने की शक्ति का नाम धृति है । जिस शक्ति के द्वारा आदमी योग ध्यान का अभ्यास करता है, प्राण, मन, इन्द्रियों पर नियत्रंण करने का प्रयास करता है वह सात्विक धृति कहलाती है । उन्होने कहा कि इन वर्षों में योग काफी व्यापक हुआ है । शिक्षा, चिकित्सा में भी योग-ध्यान के प्रयोग होने लगे हैं । योग को आसन प्राणायाम तक सीमित कर दिया गया है । ये उसके एक प्रकार है, योग का मूल अर्थ है मोक्ष से जोडने का आचरण । उन्होने कहा कि विकार का हेतु मिलने के बाद भी जिसका चित विक्रत नहीं होता है जो कितने भी कष्ट आने पर भी न्याय के मार्ग पर से विचलित नहीं होता है वह धीर पुरूष कहलाता हैं ।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल के तत्वावधान में कन्या मण्डल का छः दिवसीय प्रक्षाध्यान शिविर आयोजन

आचार्च महाप्रज्ञ के महत्वपूर्ण अवदान प्रेक्षाध्यान को केन्द्र में रखकर युवाचार्यश्री एवं साध्वी प्रमुखाश्री की प्रेरणा से दिनांक 1 अप्रेल से 6 अप्रेल तक जैन विश्वभारती लाडनुं में आयोजित छः दिवसीय शिविर का समापन समारोह मोमासर में मरूदेवा अतिथि गृह में आचार्य महाप्रज्ञ के सान्निध्य में हुआ । इस शिविर के समापन सत्र में उद्बोधन देते हुए आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि प्रेक्षाध्यान के शिविर बहुत महत्वपूर्ण हैं ।

इसके माध्यम से अपने ईमोसंस पर नियत्रंण किया जा सकता है, स्वभाव परिवर्तन की प्रक्रिया शुरू होती है । अभातेमम एक अच्छा कार्य अपने हाथों में लिया है यह प्रयोग आगे भी चलता रहे । युवाचार्य महाश्रमण अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल को जागरूक संस्था बताते हुए कहा कि यह हमारी महिला सेना की संस्था है । इसके द्वारा अनेक क्षेत्रों में काम किया जा रहा है । मण्डल का आवश्यक काम महिलाओं व कन्याओं के विकास का प्रयत्न करना है । कन्याओं का विकास करना और ज्यादा आवश्यक है । उन्होने कहा कि महिलाओं में बोद्धिक विकास बहुत हुआ है । इसके साथ भावात्मक विकास हो यह जरूरी है । महिला मण्डल ने इस और ध्यान दिया है । जैन विश्वभारती में कन्याओं का प्रेक्षाध्यान शिविर लगाकर इस और कदम बढाये है उन्होने जैविभा का वातावरण स्वास्थ्य और साधना के लिए अनुकुल बताते हुए कहा कि एक बालिका को संस्कारी बनाने से पूरा परिवार संस्कारी बनता है । उन्होने शिविर संभागी कन्याओ को संबोधित करते हुए कहा कि कन्याएं जहां कहीं भी रहें वहां समस्या को बढाने वाला काम न हो इसका ख्याल रखें । सबको समस्याओं का समाधान करने वाला बनना है और स्वर्ग तुल्य वातावरण बनाने का प्रयास करना है । साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा ने कहा कि आपका जोश, होश पुज्यवर का पोषण प्राप्त करके आत्मसंतोष अनुभव करेगीं । प्रशिक्षित कन्याओं को उन्होने कहा की अभी आपका प्रवेश हुआ है आगे बढना है प्रेक्षाध्यान सीखने का पहला लक्ष्य है स्वस्थ शरीर फिर आत्मशोधन प्रत्यक्ष को देखने के लिए लंगी प्रक्रिया से गुजरना पडता है हम सामुदायिक जीवन जीते हैं इस व्यावहारिकता का विकास होना जरूरी है । इस शिविर में देश भर से कन्यामण्डल की 40 बहनें प्रतिभागी बनी । इस अवसर पर मण्डल की प्रधान ट्रस्टी सुशीला पटावरी, राष्ट्रीय अध्यक्ष कनक बरमेचा, महामंत्री वीणा बैद ने अपने विचार व्यक्त किये ।

महाप्रज्ञ ने किया श्रावक श्राविकाओं के निवास स्पर्श

मंगलवार सुबह प्रवचन से पूर्व आचार्य महाप्रज्ञ एवं युवाचार्य महाश्रमण सहित साधुओं ने श्रावक श्राविकाओं के निवास को स्पर्श किया । उनमें प्रमुख श्रावकों में सुरेन्द्र पटावरी, पानमल कुहाड, अरूण संचेती, तेयुप अध्यक्ष जगत संचेती, किशनलाल पटावरी, चैनरूप पटावरी,उतम पटावरी एवं कन्हैयालाल पटावरी थे । आचार्य महाप्रज्ञ ने सुरेन्द्र पटावरी एवं अरूण संचेती के निवास पर पारिवारिक सौहार्द के सूत्रों की चर्चा करते हुए नैतिकता, प्रामाणिकतापूर्व जीवन को जरूरी बताया ।